नमिराजर्षि

लेखक: – डॉ. पदमचन्द्र जी म. सा.

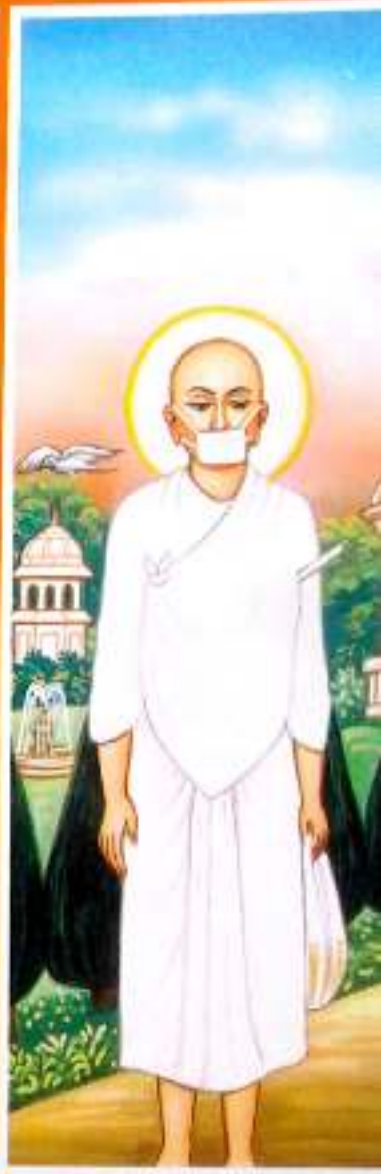

बड़ी साधु वन्दना सचित्र कथायें भाग 3

Scanned by CamScanner

नमि राजर्षि

कविकुल शिरोमणि, एकभवावतारी आचार्य सम्राट् पूज्य श्री जयमल जी म. सा. की कालजयी अलौकिक काव्यकृति "बड़ी साधु वन्दना" की एक सौ ग्यारह गाथाओं में से 13वीं गाथा में वर्णित संयम-पालक उज्ज्वल आत्मा 'कपिल केवली' पर आधारित रोचक एवं भावपूर्ण 'चित्रकथा' का सुज्ञ पाठक रसास्वादन कर चुके हैं।

इसी क्रम में अब प्रस्तुत है **"नमि राजर्षि"** का प्रेरक आगमिक प्रसंग। शब्दों के सरस चितेरे विद्वद्वर्य डॉ. पदमचन्द्र जी म. सा. ने बहुत ही आकर्षक शैली में इसे प्रस्तुत कर जन सामान्य पर महत् उपकार किया है।

नमिराज मिथिला के राजा थे। एक बार वे भयंकर दाह-ज्वर से ग्रस्त हो गये। अनेकानेक उपचार करवाये पर छह माह की अवधि व्यतीत हो जाने पर भी वेदना शांत नहीं हुई। एक दिन किसी वैद्य ने बावना-चंदन के लेप का उपचार बताया। रानियाँ चन्दन घिसने लगीं। इससे उनके हाथों के कंगन आपस में टकराये और आवाज करने लगे। दाह पीड़ित नमिराज उस आवाज को सह न सके। इस पर रानियों ने सौभाग्य सूचक एक-एक कंगन अपने हाथों में रखकर शेष कंगन उतार दिये और चंदन घिसने लगीं। अब कंगन की आवाज आनी बंद हो गई।

इस घटना ने नमिराज की चिन्तन धारा को परिवर्तित कर दिया। वे सोचने लगे—'जहाँ अनेक हैं, वहाँ टकराहट है और जहाँ टकराहट है वहाँ व्यथा है, अशांति है। जहाँ एक है, वहाँ टकराहट नहीं है। अतः वहाँ शांति है, सुख है।' चिन्तन की गहराई में उतरने पर राजा को धन, परिवार और फिर अपना शरीर, मन, इन्द्रियाँ आदि की भीड़ व्यथा और अशांति का कारण लगने लगी।

नमिराज के इस उदात्त चिन्तन ने उन्हें आत्मजागृत कर दिया। वे राज्य, राजपरिवार, धन-धान्य आदि की मोह-माया त्याग मुनि बन गये और आत्म-साधना के पथ पर अग्रसर हुये।

आशा है कि पाठकगण नमि राजर्षि की एकत्व भावना का चिन्तन अपने जीवन में उतारेंगे और आत्म—कल्याण की राह पर अग्रसर होंगे।

—उपाध्याय प्रवर श्री पार्श्वचंद्र जी म. सा.

❐ लेखक : डॉ पदमचन्द्र जी म. सा.

❐ सम्पादक : संजय सुराना

❐ प्रथमावृत्ति : भादवा सुद 13, वि. सं. 2064, 25 सितम्बर 2007 (आचार्य श्री जयमल जी म. सा. की 300 वीं जयंती)

❐ प्रतियाँ : दस हजार

❐ मूल्य : पच्चीस रूपये मात्र

• प्रकाशक : •

श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन, चेन्नई

3A, Vepery Church Road, Chennai-600 007
Mob. : 9444143907

• डिजाइन एवं प्रिंटिंग : •

पद्मोदय प्रकाशन

A-7, अवागढ़ हाउस, अंजना सिनेमा के सामने, एम.जी. रोड, आगरा-2 दूरभाष : 09319203291

Scanned by CamScanner

नमिराजर्षि

आशीर्वाद प्रदाता

जयगच्छाधिपति आचार्यप्रवर श्री शुभचन्द्र जी म. सा.
संयम शिरोमणि पण्डित रत्न उपाध्यायप्रवर
श्री पार्श्वचन्द्र जी म. सा.

लेखक

जयगच्छीय दशम पट्टधर आचार्यप्रवर
श्री लालचन्द्र जी म. सा. के सुशिष्य
डॉ. श्री पदमचन्द्र जी म.सा.

सम्पादक : संजय सुराणा

प्रकाशक : श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन, चैन्नई

Scanned by CamScanner

नमिराजर्षि

धन्य कपिल मुनिवर, नमी नमूँ अणगार।
जेणे तत्क्षण त्याग्यो, सहस्र-रमणी परिवार।।13।।

(बड़ी साधु वन्दना)

युवराज युगबाहु और मदनरेखा

मालव प्रदेश का एक सुन्दर समृद्ध नगर था—सुदर्शनपुर। मणिरथ मालव-प्रदेश का राजा था और युगबाहु उनके अनुज का नाम था। राजा मणिरथ के कोई सन्तान नहीं थी, इसलिये उसने युगबाहु को युवराज पद पर प्रतिष्ठापित कर दिया था। युगबाहु और राजा मणिरथ में परस्पर घनिष्ठ प्रेम था। युवराज युगबाहु का व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक था।

युवराज युगबाहु की पत्नी का नाम मदनरेखा था। युवरानी मदनरेखा अत्यंत कमनीय बदन की रति समान सुन्दर थी। वह पूर्णतया पतिव्रता एवं जिनधर्मोपासक नारी थी।

यौवन, राजसत्ता और सुन्दरता—इन तीनों के होने पर भी युगबाहु तथा मदनरेखा सरल व विनम्र थे। उनमें अहंकार का लेशमात्र भी भाव नहीं था। उनके चन्द्रयश नाम का एक पुत्र था।

Scanned by CamScanner

कालान्तर में मदनरेखा पुनः गर्भवती हुई जिससे उसका शारीरिक सौन्दर्य और अधिक निखर गया तथा चेहरा अत्यंत लावण्यमय दिखाई देने लगा। उन्हीं दिनों राजा मणिरथ ने संयोगवश उसको कुछेक क्षण देखा। वह उस सौन्दर्यमूर्ति को देखता ही रह गया। उसके मन में हलचल मच गई। अन्तर में कामवासना का ज्वार-सा उफान लेने लगा। विचलित मणिरथ ने विचार किया—'ओह ! इतनी सुन्दर स्त्री तो मैंने आज तक नहीं देखी। कौन है यह सुन्दरी ?'

मणिरथ ने एक चतुर दासी को बुलाया और पूछा—"कौन है यह सुन्दर स्त्री ?" दासी ने बताया—"स्वामी ! यह सुन्दरी आपके ही अनुज और राज्य के युवराज युगबाहु की पत्नी मदनरेखा है।"

राजा मणिरथ ने मदनरेखा के प्रति कामाविष्ट होकर उसे आकृष्ट करने का निश्चय किया। वह उसे प्राप्त करने के लिए नित्य नई योजनाएँ बनाने लगा। उसने कई योजनाएँ बनायीं, मूल्यवान उपहार आदि भिजवाए पर पतिव्रता मदनरेखा को अपनी ओर आकृष्ट नहीं कर पाया। अनेक योजनाओं में विफल हो

Scanned by CamScanner

जाने पर मणिरथ ने उसे पाने के लिए युगबाहु को युद्ध में भेजकर मरवाने का षड्यंत्र रचा।

एक दिन उसने अपने अनुज युगबाहु को बुलाकर कहा—"आजकल सीमा पार आततताईयों ने आतंक मचा रखा है। उन्हें हराकर भगाना है। तुम सेना लेकर वहाँ जाओ और शान्ति स्थापित करो।"

रणकुशल वीर योद्धा युवराज युगबाहु युद्ध से क्या डरता ? उसने राजा मणिरथ की आज्ञा को सहज रूप से स्वीकार कर लिया और सेना लेकर सीमा पार शांति स्थापित करने चल दिया।

अब मदनरेखा अकेली थी। कामांध बने मणिरथ राजा ने दुस्साहस की सभी सीमाएँ पार कर दीं। एक दिन वह चोरों की भाँति गुप-चुप छुपते-छुपते अर्द्धरात्रि में मदनरेखा के महल की तरफ चला आया। दासी को द्वार खोलने के लिये आवाज लगाई। मदनरेखा उस समय जाग रही थी। वह समझ गई कि खतरा सिर पर आ पहुँचा है। वह तुरंत पिछले दरवाजे से निकलकर राजमाता के महल में चली गई। कारण पूछने पर उस विवेकशील नारी ने बात को संभालते हुए राजमाता से कहा—"शायद ! जेठ जी रास्ता भूलकर मेरे महल की तरफ आ गए हैं।"

राजमाता तुरंत युगबाहु के महल में पहुँची। अपनी माता को अर्द्धरात्रि में वहाँ देख मणिरथ हड़बड़ा गया और बोला—"मातुश्री ! आप....? इस समय ? यहाँ ?"

राजमाता ने अपने पुत्र राजा मणिरथ से कहा—"पुत्र ! यही मैं तुमसे पूछना चाहती हूँ। यह तो युगबाहु का महल है ?"

झेंपते हुए मणिरथ ने कहा—"ओह मातेश्वरी ! मैं शायद रास्ता भूल गया।" असफल मणिरथ चुपचाप वापस आ गया।

युगबाहु के वापस आने तक मणिरथ ने इस तरह के अनेक प्रयत्न किए पर वह अपनी इन कुचेष्टाओं से शीलवती मदनरेखा को शीलधर्म से तिल मात्र भी विचलित नहीं कर सका। उसके सारे प्रयत्न व्यर्थ रहे।

उधर सीमान्त क्षेत्र के क्षेत्रपति व आततताईयों को पराजित कर युवराज युगबाहु विजयश्री का वरण कर वापस सुदर्शनपुर आ गए। नगर के बाहर एक उद्यान में पड़ाव डालकर एक सन्देशवाहक के साथ अपनी विजय का सन्देश

Scanned by CamScanner

राजा मणिरथ व एक अन्य सेवक के साथ पत्नी मदनरेखा को भिजवा दिया। मदनरेखा सन्देश प्राप्त कर युगबाहु से मिलने की अधीरता लिए तुरंत उस उद्यान में चली आई।

मणिरथ द्वारा युगबाहु की हत्या

मणिरथ राजा का कामुक हृदय तो कामवासना की तीव्र अग्नि से जल रहा था। युगबाहु के विजयी बनकर वापस आने के सन्देश सुनकर उसकी कल्पनाओं के महल ढह गये। उसे लगा – "मदनरेखा को प्राप्त करने की इच्छा अब मेरे लिए मात्र स्वप्न बनकर रह जायेगी।" इस विचार से वह अत्यंत बैचेन हो गया। उसकी बैचेनी इस सीमा तक बढ़ गई कि मदनरेखा को प्राप्त करने के लिए उसने स्वयं अपने हाथों से युगबाहु को मौत के घाट उतारने का निश्चय कर लिया। उसने सोचा—'युगबाहु की मृत्यु के पश्चात् मदनरेखा विवश हो जायेगी और उसे मजबूरी में मेरी शरण लेनी ही पड़ेगी।'

भाई की हत्या करने का निश्चय कर हाथ में नंगी तलवार लिए कामांध मणिरथ अपने अश्व पर आरूढ़ होकर राजमहल से बाहर निकला और नगर के बाहर उस उद्यान की ओर बढ़ता गया, जहाँ युगबाहु निशंक बन सुख की निद्रा में सो रहा था। उस दिन अमावस्या की काली अंधेरी रात थी। अश्व को सरपट दौड़ाते हुए राजा मणिरथ उद्यान में जा पहुँचा। अब उसका अश्व युगबाहु के शयनागार की ओर बढ़ने लगा। शयनागार के निकट पहरे पर तैनात सैनिकों ने उसे रोका। खटपट व बातों की आवाज सुनकर मदनरेखा की निद्रा तुरंत खुल गई। किसी अनजान खतरे की आशंका से वह सचेत बन गई। उसकी छठी इन्द्री उसे कह रही थी कि कोई भयानक संकट सिर पर आ खड़ा है।

मदनरेखा ने तुरंत अपने प्रियतम युगबाहु को निद्रा से जगाकर कहा—"देव ! लगता है, खतरा सन्निकट है। आप सावधान हो जाइए।" युगबाहु सावधान हो खतरे को भाँप पाता तभी मणिरथ, नंगी तलवार लिए, रौद्र रूप बनाए उसके शिविर में प्रवेश कर गया। उसे देख युगबाहु की आँखें विस्फारित हो गईं। वह कुछ समझ पाता, उससे पूर्व ही मणिरथ की तलवार का एक भरपूर वार उसकी गर्दन पर पड़ा। युगबाहु की गर्दन आधी कटकर लटक गई, खून का फव्वारा-सा फूट पड़ा।

Scanned by CamScanner

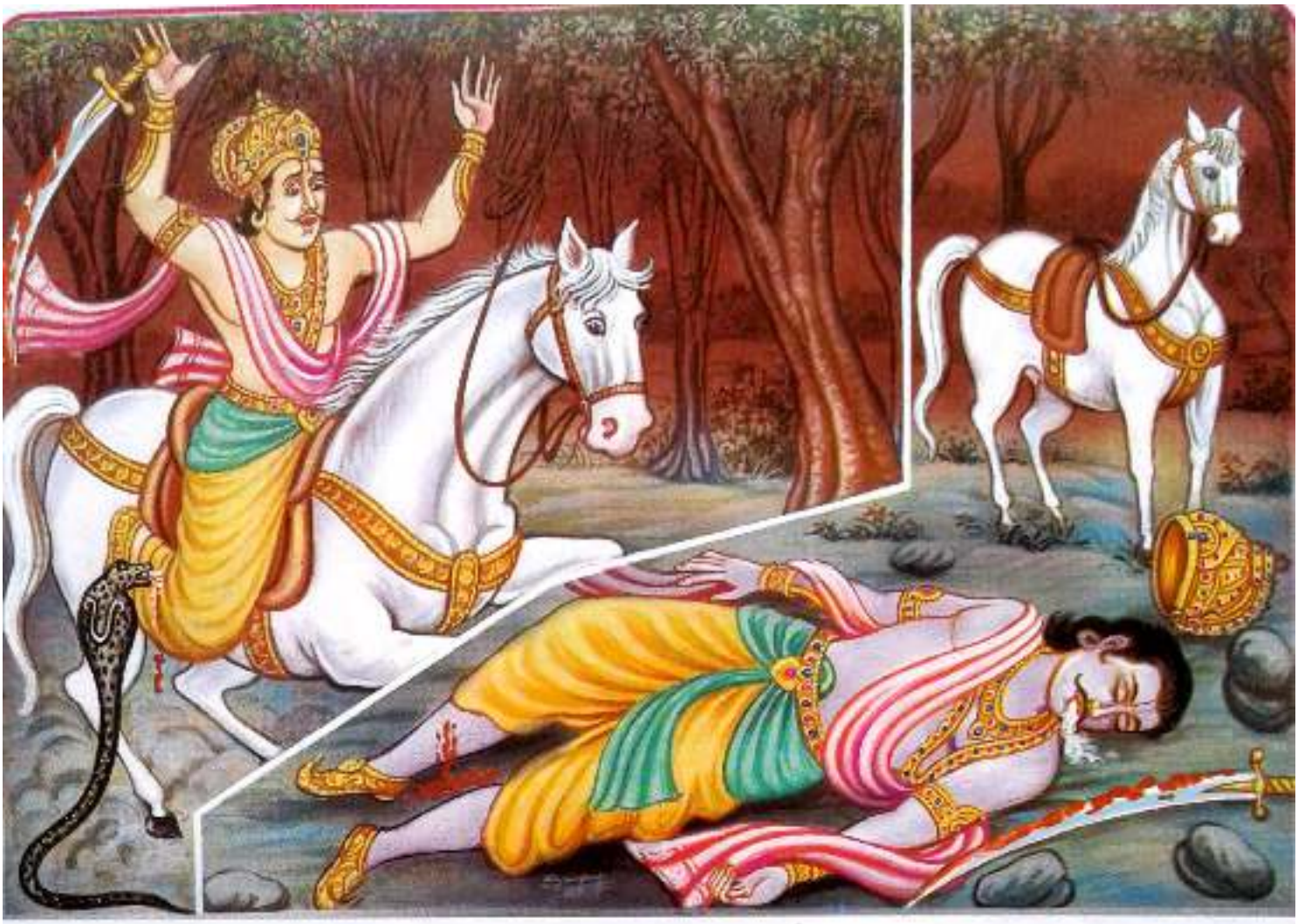

बुरे का अंत बुरा

मणिरथ रक्तरंजित तलवार लिए जिस तरह वहाँ आया था, उसी तरह वापस वहाँ से नगर की ओर भाग गया। राह में एक अत्यंत विषधर नाग पर उसके अश्व का पाँव पड़ा। क्रोधित नाग ने अपने शरीर को उठाकर अश्व को दंश मारा। वह दंश राजा के पाँव में लगा और कुछ ही क्षणों में विष के प्रभाव से राजा मणिरथ ने अश्व की पीठ पर ही दम तोड़ दिया और वह भूमि पर गिर पड़ा।

उद्यान में मदनरेखा के समक्ष उसके पति युगबाहु का आधा सिर कटा धड़ कुछ समय तक तड़पता रहा। मरणासन्न पति की आँखों में मदनरेखा को क्रोध का अतुल सागर-सा उमड़ता दिखाई दिया, उस क्रोध में बदला लेने की भावना प्रबल थी। मदनरेखा सती थी, धर्मप्रिय थी, शीलवंती थी। उसने सोचा—'यदि मरते समय इनके मन में क्रोध और बदले की भावना रही तो इनकी दुर्गति निश्चित है। मेरा कर्त्तव्य है कि मैं इस समय इन्हें धैर्य बँधाकर इनके अंतर में शांति की भावना उत्पन्न करूँ।"

Scanned by CamScanner

मदनरेखा द्वारा मरणासन्न युगबाहु को सांत्वना

मदनरेखा ने युगबाहु के सिर को अपनी गोद में रख लिया और उसे सांत्वना देती हुई कहने लगी—"नाथ ! जो कुछ भी घटित हुआ, वह संसार का स्वभाव है। इसमें दूसरों को दोषी मानना हमारी भूल है। वास्तव में हमें अपने किए पूर्व कर्मों को ही दोषी मानना चाहिए। भाई के प्रति आप अपने क्रोध का त्याग कीजिए और मन को शांत बनाइए। "खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे" का स्मरण कर प्राणी मात्र को क्षमा कर दीजिए और शांतभाव से पंच-परमेष्ठी मंत्र का ध्यान करिए।" मदनरेखा ने युगबाहु को महामंत्र का पाठ सुनाया।

पत्नी के आत्मकल्याणी वचनों ने युगबाहु के क्रोध को शांत कर दिया। अपने हत्यारे भाई मणिरथ के प्रति उसके मन का वैर भाव समाप्त हो गया। शांत भाव से महामंत्र का पाठ सुनते हुए उसने प्राण त्यागे। वह मरकर देव बना।

पति की मृत्यु के पश्चात् मदनरेखा ने सोचा—'अब मेरा सुदर्शनपुर में जाना ठीक नहीं रहेगा।' रात्रि का अन्तिम प्रहर था। अमावस के उस घने अंधेरे में वह चुपचाप शिविर से निकलकर निकट के जंगल की ओर चल पड़ी।

Scanned by CamScanner

पुत्र जन्म

गर्भवती मदनरेखा कई दिनों तक बीहड़ जंगलों में भटकती रही। प्रभु का ध्यान और नमस्कार महामंत्र का जाप ही उसे उस भयानक वन के भयभीत वातावरण में सम्बल दे रहा था। एक दिन उसे तीव्र प्रसव-पीड़ा प्रारम्भ हुई। उसने समझ लिया कि गर्भ का समय पूरा हो चुका है। कुछ ही समय पश्चात् उस सती नारी ने एक तेजस्वी पुत्र को जन्म दिया। उसने अपनी पहनी हुई साड़ी के आधे वस्त्र का झूला बनाया, उस झोली सदृश झूले में अपने पुत्र को सुलाकर उसे एक पेड़ पर टाँग दिया।

पुत्र को झोली में डालकर मदनरेखा शरीर-शुद्धि के विचार से पास के सरोवर की ओर गई। सरोवर के तट पर बैठकर वह शरीर-शुद्धि करने लगी। अकस्मात् सरोवर में जल-क्रीड़ा के लिए आए हुए हाथियों के झुंड में से एक हाथी उधर आ निकला। मदोन्मत्त बने उस हाथी ने मदनरेखा को अपनी सूंड में उठाया और आकाश में उछाल दिया। संयोगवश अपने विमान में बैठकर नन्दीश्वर द्वीप की ओर अपने पिता मुनि के दर्शनार्थ जाने वाले मणिप्रभ नामक विद्याधर ने यह देख लिया और विमान निकट ले जाकर उस नारी को नीचे गिरने से पहले ही लपक कर विमान में खींच लिया।

मदनरेखा धरती पर गिरने से तो बच गई पर उसका शील विद्याधर की कामुकता के कारण पुनः संकट से घिर गया। मदनरेखा को जब यह ज्ञात हुआ कि इसके पिता मुनि हैं, तो उसने भी दर्शन की भावना व्यक्त की।

विद्याधर मदनरेखा के साथ मुनि के दर्शन करने पहुंचा। मुनि ज्ञानी थे, उन्होंने मणिप्रभ को उपदेश देकर समझाया। उसी समय एक अत्यन्त द्युति वाले देव ने आकर मदनरेखा को प्रथम प्रणाम किया फिर मुनि को। इस बात से मणिप्रभ विद्याधर को कुतुहल हुआ। उसने देव से इसका कारण पूछा तो देव ने मदनरेखा की तरफ इशारा करके कहा—"देवानुप्रिय ! इस पुण्यात्मा के कारण ही मेरी सद्गति हुई।" फिर देव ने अपना परिचय देते हुए मदनरेखा से कहा—"देवी ! मैं युगबाहु का जीव हूँ। तुम्हारे उद्बोधन से मैं देव बना हूँ।" मदनरेखा को संतोष हुआ किन्तु उसे अपने नवजात शिशु की चिन्ता हो रही थी।

देव ने कहा—"तुम घबराओ नहीं, उसे मिथिला-नरेश पद्मरथ ले गया है। उसे अपना पुत्र बना लिया है और उसका नाम रखा है नमी।" इसके पश्चात देव

Scanned by CamScanner

ने मदनरेखा की भावनानुसार उसे साध्वियों के पास लाकर छोड़ दिया। मदनरेखा ने संयम ग्रहण कर लिया। साध्वी सुदर्शना की शिष्या बन गईं और नामकरण हो गया साध्वी सुव्रता।

निःसंतान मिथिला-नरेश को पुत्र-प्राप्ति

इधर जंगल में मिथिला नगर का नरेश राजा पद्मरथ हाथियों को पकड़ने आया हुआ था। संयोग से वह उसी ओर चला आया, जहाँ पेड़ पर मदनरेखा ने अपने नवजात शिशु को झोली में छोड़ा था। शिशु जोर-जोर से रो रहा था। राजा पद्मरथ ने उस शिशु के रोने की आवाज सुनी। सुनसान-भयानक बीहड़ जंगल में शिशु के रोने की आवाज सुन पद्मरथ वहीं रुक गया। उसने अपने सैनिकों से कहा—"पता करो, यह रोने की आवाज कहाँ से आ रही ही है ? सैनिक रोने की ध्वनि की दिशा में बढ़े। शीघ्र ही वे उस पेड़ के नीचे पहुँच गए जहाँ शिशु रो रहा था। कुछ देर में राजा भी वहाँ पहुँचा गया।

Scanned by CamScanner

राजा पद्मरथ ने रोते हुए शिशु को झोली से निकालकर गोद में ले लिया। बालक सुन्दर था, सुडौल था और तेजस्वी भी था। उसके हृदय में बच्चे को देखकर वात्सल्य-भाव उमड़ आया। उसने नवजात बालक को पुचकारा और चुप कराया। फिर अपने सैनिकों से बोला—"पता करो इसके माता-पिता कहाँ हैं ?" सैनिकों ने चारों ओर बालक के माता-पिता को ढूँढ़ने का प्रयत्न किया। किसी के नहीं मिलने पर राजा पद्मरथ उसे मिथिला ले आया।

नामकरण

राजा पद्मरथ की रानी पुष्पमाला उस बच्चे को देखकर अत्यंत प्रसन्न हुई। उन दोनों के कोई सन्तान नहीं थी। रानी ने उसे अपनी सन्तान मान लिया और धूमधाम से बच्चे का जन्मोत्सव मनाया। राजा पद्मरथ के सभी शत्रु नम गये, अतः बालक का नाम 'नमिकुमार' रखा गया।

मिथिला में नमिकुमार का पालन-पोषण अत्यंत वात्सल्य के साथ होने लगा। पाँच धायों की देख-रेख में नमिकुमार बड़ा होने लगा। कुछ बड़ा होने पर उसे राजगुरु के पास भेजा गया, जहाँ उसने समस्त विद्याओं एवं कलाओं में कुशलता प्राप्त की। पुरुष योग्य कलाओं व विद्याओं में निष्णात बनने और विवाह योग्य युवा होने पर राजा पद्मरथ ने इक्ष्वाकुवंश की १००८ कुलीन, गुणवती एवं रूपवती राज कन्याओं के साथ उसका विवाह करा दिया।

उधर सुदर्शनपुर में राजा मणिरथ के मरणोपरांत, उसके कोई पुत्र नहीं होने से युगबाहु और मदनरेखा का बड़ा पुत्र चन्द्रयश राजा बना। चन्द्रयश ने अपनी माता मदनरेखा की चारों दिशाओं में बहुत खोज करवाई किन्तु मदनरेखा का कहीं पता नहीं लगा। निराश मन चन्द्रयश ने सोच लिया—'मेरे भाग्य में शायद माता का सुख व उसकी सेवा नहीं लिखी है।'

इधर नमिकुमार के सब तरह से योग्य हो जाने पर मिथिला नरेश ने विचार किया—'अब राज-काज की जिम्मेदारी नमिकुमार पर डालकर मुझे संयम ग्रहण कर मुनिधर्म का पालन करते हुए अपना जीवन सफल बनाना चाहिए।' ऐसा निश्चय कर राजा पद्मरथ ने नमिकुमार का राज्याभिषेक महोत्सव आयोजित कर उसे सिंहासनारूढ़ किया और स्वयं प्रव्रजित बन निर्मल संयम का पालन करते हुए विचरने लगे। लम्बे समय तक उत्कृष्ट संयमाराधना कर उन्होंने अंतिम समय में समाधि-मरण पूर्वक सुगति को प्राप्त किया।

Scanned by CamScanner

हस्ति के लिये युद्ध

एक दिन राजा नमिकुमार का सर्वश्रेष्ठ विशालकाय कज्जलगिरि के समान सुन्दर हस्ति-रत्न मदोन्मत्त होकर सारे बंधनों को तोड़ता हुआ गजशाला से भाग निकला। राजमार्गों पर लोगों को त्रास देते हुए वह नगर से बाहर की ओर भागा। राजा नमिकुमार के कुशल महावतों और सैनिकों ने हाथी को वश में करने के लिए उसका पीछा किया। बहुत प्रयत्नों के पश्चात् भी हाथी उनके हाथ नहीं आया और जंगलों में भाग गया। सभी हाथ मलते हुए वापस आ गए।

वह उन्मत्त हाथी जंगलों में दौड़ता हुआ सुदर्शनपुर की राज्य सीमा में प्रवेश कर गया और वहाँ उत्पात मचाने लगा। सुदर्शनपुर की प्रजा राजा चन्द्रयश के पास अपनी जान-माल की रक्षा की पुकार लेकर पहुँची—"महाराज ! इस मदमस्त हस्ति से हमारी रक्षा करें।"

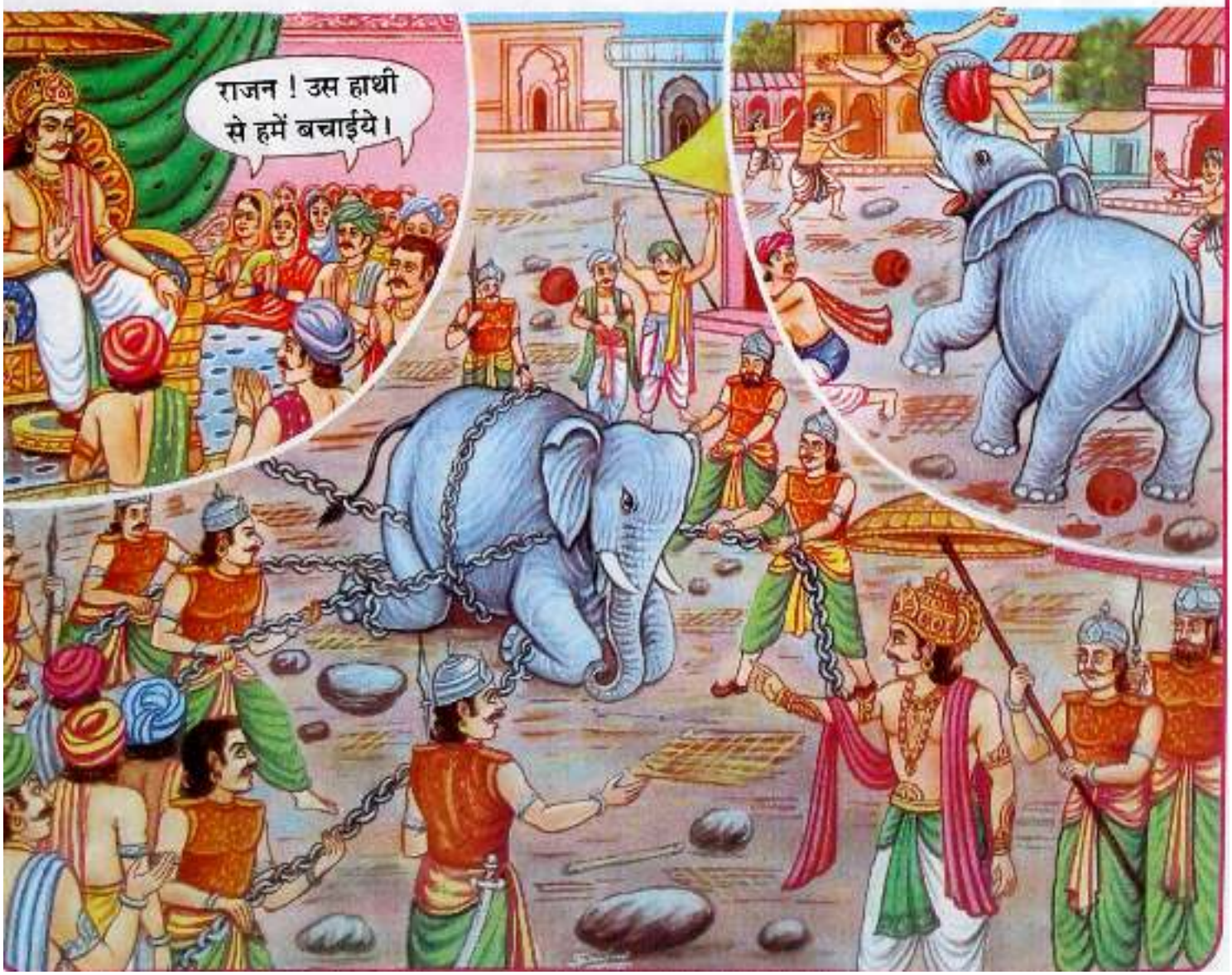

Scanned by CamScanner

अपनी प्रजा को हाथी के उत्पात से बचाने के लिए राजा चन्द्रयश अपने कुशल महावतों और सैनिकों को लेकर उसे पकड़ने गया। उसने हाथी के चारों ओर से घेरा डाल दिया। संभवतः उस समय तक हाथी का मद उतर चुका था, इसलिए वह सहज ही वश में हो गया।

अब मिथिला का वह हस्तिरत्न सुदर्शनपुर की गजशाला की शोभा बढ़ाने लगा। ऐसे सुन्दर, आकर्षक और अति भव्य हाथी को पाकर चन्द्रयश अपने सौभाग्य की सराहना करने लगा—"वाह ! इन्द्र के ऐरावत हस्ति के समान यह श्रेष्ठ गजराज मेरी गजशाला में है।"

इधर राजा नमिकुमार के सेवक हाथी की खोज में लगे हुए थे। एक दिन उन सेवकों ने यह पता लगा लिया कि हाथी सुदर्शनपुर में राजा चन्द्रयश के पास है। सेवकों ने अपने नरेश नमिकुमार को सूचना दी—"महाराज ! इस राज्य का हस्तिरत्न राजा चंद्रयश की गजशाला में कैद है।"

राजा नमिकुमार ने चन्द्रयश राजा के पास दूत भेजकर हाथी वापस मंगवाया। चन्द्रयश ने हाथी वापस देने से इन्कार कर दिया। राजा नमिकुमार ने यह सुना तो उसका पारा चढ़ गया। उसके भीतर की क्षत्रियता जागृत हो गई। उसने तुरंत अपने विशिष्ट दूत के साथ राजा चन्द्रयश को कहलवाया—"या तो हमारा हाथी वापस कर दो, अन्यथा हम शक्ति बल से अपना हाथी वापस लेंगे। इससे दो राजाओं में युद्ध होगा और प्रजा व्यर्थ ही पीड़ित होगी।"

सुदर्शनपुर पहुँचकर नमिकुमार का दूत राजा चन्द्रयश की राजसभा में पहुँचा। उसने चन्द्रयश का अभिवादन कर अपने स्वामी का सन्देश सुनाया। दूत का कथन सुनकर राजा चन्द्रयश बोला—"अपने स्वामी से जाकर कहना कि उनका हाथी अपने आप हमारे राज्य की सीमा में घुस आया था। उसने यहाँ बहुत उत्पात मचाया और यहाँ की प्रजा को त्रास पहुँचाया। हमने अपनी शक्ति से उस उन्मत्त एवं उत्पाती हस्ति को अपने वश में किया है। अपने नरेश से कहना कि यदि उनको हाथी ही चाहिए तो उस हाथी की कामना त्याग कर मेरी गजशाला के किसी अन्य हस्ति को चुनकर ले जाएँ। अपने बल से प्राप्त वह हस्ति में किसी भी दशा में वापस नहीं करूँगा।"

Scanned by CamScanner

दूत वापस लौटकर मिथिला आया। उसने चन्द्रयश का कथन नमिकुमार को सुना दिया। नमिकुमार चन्द्रयश के इस गर्व युक्त कथन को सुनकर उत्तेजित ही नहीं बल्कि आग-बबूला हो गया। उसने कहा—"अपनी शक्ति पर चन्द्रयश को इतना घमंड ! वह हमारी शक्ति से परिचित नहीं है। अब तो वह हाथी हमारे लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न है। हम उसे वापस लेकर ही रहेंगे।"

नमिकुमार ने युद्ध करने का निश्चय कर अपने सेनापति एवं अग्रणी योद्धाओं को बुलाया। उन्हें सेना सजाने और युद्ध के लिए तुरंत तत्पर होने का आदेश दिया और पूरी तैयारी के साथ सेना लेकर सुदर्शनपुर की ओर चल दिया। सुदर्शनपुर पहुँचकर उसने नगर को चारों ओर से घेर लिया।

प्रातःकाल के समय नमिकुमार ने सेनापति एवं सैन्यदल नायकों को बुलाकर आदेश दिया—"नगर के सभी बन्द द्वारों को तोड़ दो और नगर में प्रवेश करके युद्ध करो।"

Scanned by CamScanner

साध्वी सुव्रता द्वारा रहस्योद्‌घाटन

नमिकुमार के सैनिक नगर-द्वार की ओर प्रस्थान करने ही वाले थे कि इतने में नमिकुमार ने श्वेत वस्त्रधारी दो साध्वियों को युद्ध-स्थल की ओर आते देखा। नमिकुमार ने सैनिकों को रुकने की आज्ञा दी और वह अपलक दृष्टि से अपनी ओर बढ़ी चली आ रही सतियों को देखने लगा। आश्चर्यचकित नमिकुमार सोचने लगा—'अरे ! ये साध्वियाँ यहाँ क्यों आ रही हैं ? युद्ध-स्थल पर तो साधु-महात्माओं तथा सती-साध्वियों का न आना एक सामान्य नियम है। नियम-विरुद्ध इनका इधर आना क्या किसी विशेष प्रयोजन से है।'

बात यह हुई कि जब साध्वी सुव्रता ने इस युद्ध के सम्बन्ध में सुना तो वे अपनी गुरुवर्या के चरणों में पहुँची और उन्हें बताया—"एक हस्ति के निमित्त अपनी-अपनी सेनाओं के साथ आमने-सामने खड़े युद्ध के लिए तत्पर दोनों राजा वस्तुतः सहोदर हैं और मेरे ही सांसारिक पुत्र हैं। यह रहस्य केवल मैं ही जानती हूँ। मैं चाहती हूँ कि यह युद्ध न हो, लाखों सैनिक व्यर्थ में न मारे जाएँ।"

Scanned by CamScanner

गुरुणी ने साध्वीजी की अहिंसा एवं करुणा भावना की सराहना करते हुए उन्हें युद्ध-स्थल पर जाकर दोनों राजाओं को यह रहस्य बताकर युद्ध न करने की प्रेरणा देने के लिए अनुमति प्रदान की। गुरुणी जी की अनुमति पाकर साध्वी सुव्रता एक अन्य साध्वी के साथ युद्ध-स्थल की ओर चल दीं। राजा नमि ने इन्हीं दो साध्वियों को अपनी ओर आते देखा था।

साध्वियाँ जब निकट आ गईं तो नमिकुमार ने हाथी से उतरकर दोनों सतियों को वन्दन किया और अत्यंत विनम्र स्वर में उनसे कहा—"आप और यहाँ, युद्ध-स्थल पर ? तीर्थंकर भगवंतों ने तो संयमधारियों को युद्ध-भूमि पर जाने का निषेध किया है। आपको ज्ञात होना चाहिए कि इस समय मैं, राजा नमि और मेरी सेना तथा राजा चन्द्रयश व उसकी सेना दोनों ही पक्ष एक-दूसरे के खून के प्यासे बने हुए हैं। इस समय यदि आप मुझे कुछ भी उपदेश देंगी तो उसका मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। मेरी आप दोनों संयमधारिणी साध्वियों से प्रार्थना है कि आप यहाँ से वापस लौट जाइए और किसी एकान्त स्थान पर धर्माराधना कीजिए।"

दोनों साध्वियों में से सती सुव्रता, जो संयम लेने से पूर्व रानी मदनरेखा थी और नमिराज तथा चन्द्रयश की मातेश्वरी थीं, ने नमिराज का कथन सुनकर कहा—"राजन् ! तीर्थंकर वाणी में हम संयम-पथ पर अग्रसर होने वाली आत्माओं के लिए उत्सर्ग और अपवाद—ये दो मार्ग बताए हैं। विशेष प्रयोजन जब हो तो उनके लिए युद्ध-स्थल पर जाना निषिद्ध नहीं है। मैं भी यहाँ एक विशेष प्रयोजन से ही आई हूँ।"

राजा नमि ने फिर विनम्र स्वर से पूछा—"आपका वह विशेष प्रयोजन क्या है ?"

इस पर सती सुव्रता ने नमिकुमार से एक प्रश्न किया—"राजन् ! मुझे यह तो ज्ञात है कि यह खूनी युद्ध एक हाथी के लिए हो रहा है पर यह बताएँ कि यदि छोटे भाई का हाथी बड़ा भाई ले ले तो क्या छोटे भाई के लिए यह उचित है कि वह अपने बड़े भाई के प्राणों का प्यासा बन जाए और लाखों बेकसूर सैनिकों को मौत के मुँह में जाने दे ?"

Scanned by CamScanner

साध्वी जी का प्रश्न सुनकर राजा नमि बोला—"एक हाथी तो क्या, छोटे भाई को तो चाहिए कि वह अपने बड़े भाई को अपना सर्वस्व दे दे। लेकिन इस बात से मेरा क्या संबन्ध है ? आप यह प्रश्न मुझसे क्यों पूछ रही हैं ? मैं तो अपने पिता पद्मरथ का इकलौता बेटा हूँ। मेरे तो कोई भाई नहीं है।"

तब सती सुव्रता ने कहा—"यह तुम्हारा अज्ञान है, जिसे मैं मिटाना चाहती हूँ। तुम पद्मरथ की संतान नहीं हो। जिस चन्द्रयश से तुम युद्ध करने जा रहे हो, वह तुम्हारा सहोदर है और आयु में तुमसे बड़ा है। संसार-पक्ष में मैं ही तुम्हारी माता हूँ। सुनो, मैं तुम्हें पूरी बात विस्तार से सुनाती हूँ.....।"

साध्वी सुव्रता ने नमिराज को मणिरथ द्वारा युगबाहु की हत्या, जंगल में नमि के जन्म और उसे वहीं पेड़ पर छोड़ने तथा अपनी दीक्षा आदि का पूरा वृत्तान्त कह सुनाया।

Scanned by CamScanner

फिर साध्वी सुव्रता ने कहा—"जब मुझे पता चला कि तुम दोनों में युद्ध ठन गया है, तब मैं अपनी गुरुणी सती सुदर्शना से आज्ञा लेकर इस रहस्य को प्रकट करने एवं तुम्हारा अज्ञान दूर करने के विशेष प्रयोजन से यहाँ, युद्ध-स्थल पर आई हूँ, जिससे यह युद्ध न हो।"

सहोदर भाईयों का मिलन

नमिकुमार अवाक् साध्वी सुव्रता को देखने लगा। उसके नयन छलछला आये। वह माता के चरणों में झुक गया और बड़े भाई से मिलने को आतुर हो उठा। साध्वी सुव्रता ने कहा—"अभी उतावले न बनो, पहले मैं राजा चन्द्रयश के पास जाती हूँ।" साध्वी सुव्रता ने सुदर्शनपुर के द्वार रक्षकों के साथ महाराज चन्द्रयश के पास सूचना भेजी—"आपकी माता मदनरेखा आपसे मिलना चाहती हैं।" सूचना मिलते ही चन्द्रयश दौड़कर आया। माता को साध्वी वेश में देखकर वह पहले चकित हुआ। फिर सारी घटना सुनकर वह स्वयं ही भाई नमिकुमार से मिलने के लिए दौड़ पड़ा। युद्धभूमि अब भाई-भाई के प्रेम-मिलन की भूमि बन

Scanned by CamScanner

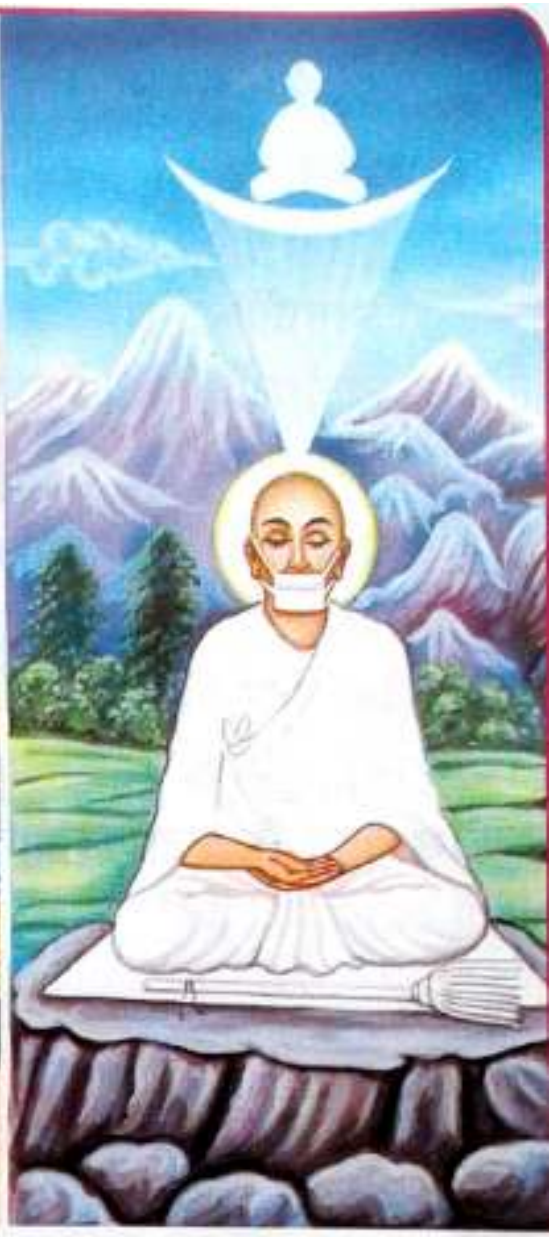

गई। साध्वी सुव्रता के सामयिक उपदेशों ने भयंकर नर-संहार को रोक दिया और दो देशों की प्रजा में प्रेम एवं शान्ति की गंगा बह उठी।

नमिकुमार का राजतिलक और चन्द्रयश का संयम पालन

चन्द्रयश ने नमिकुमार को सुदर्शनपुर का राज्य सौंपकर स्वयं दीक्षा ग्रहण कर ली। अनेक वर्षों तक संयम का पालन कर उन्होंने शरीर त्यागा और वे सिद्ध-बुद्ध और मुक्त हो गये।

नमिकुमार धर्मपूर्वक प्रजा-पालन कर रहा था। कुछ दिन वह सुदर्शनपुर में रहता और कुछ दिन मिथिलापुरी में। इस प्रकार वह दोनों स्थानों पर सुनीतिपूर्वक राज्य कर रहा था। नमिकुमार के एक पुत्र रत्न भी हो गया था। नमिकुमार सुखपूर्वक राज्य सुख भोगने लगा।

Scanned by CamScanner

दाह ज्वर में चूड़ियों का शोर

एक बार ग्रीष्म ऋतु की पूर्णिमा की रात को राजा नमिकुमार के शरीर में दाह उत्पन्न हुआ। राजा दाह से बेचैन हो उठा। बहुत सोच-विचार करने पर भी दाह का कारण नहीं समझ में आया। अन्त में कुशल वैद्यों को बुलाया गया। वैद्यों ने निदान किया और कहा कि राजा को दाह ज्वर है और यह बावना चन्दन के लेप से ही शान्त होगा।

राजा के लिए सभी रानियाँ चन्दन घिसने लगीं। पटरानी ने चन्दन का लेप किया। राजा का दाह ज्वर कुछ शान्त हो गया और उसे नींद आ गई। राजा को सोया देख पटरानी ने रानियों से कहा कि जब तक स्वामी सो रहे हैं, हम चन्दन घिस लें। रानियाँ चन्दन घिस रही थीं। चन्दन घिसते समय चूड़ियों की खनखनाहट से राजा की नींद खुल गई। राजा ने पटरानी[1] से पूछा—"ये चूड़ियाँ क्यों खनक रही हैं?"

Scanned by CamScanner

पटरानी ने बताया—"स्वामी ! आपके लिए रानियाँ चन्दन घिस रही हैं। हाथ चलाने से चूड़ियाँ आपस में टकराती हैं, इसलिए खनखनाहट होती है।"

राजा ने कहा—"लेकिन इससे मेरी नींद उचटती है।"

पटरानी ने रानियों के पास जाकर उनसे कहा—"हाथ में एक-एक मंगल चूड़ी रहने दो। बाकी सभी कंगन और चूड़ियाँ उतार दो। स्वामी की नींद उचटती है।"

रानियों ने ऐसा ही किया। एक-एक चूड़ी पहनकर वे चन्दन घिसने लगीं। चूड़ियों की खनखनाहट बन्द हो गई।

राजा ने पटरानी से पूछा—"अब चूड़ियों की आवाज नहीं आ रही है। क्या चन्दन घिसना बन्द हो गया है ?" पटरानी ने बताया—"स्वामी ! चन्दन तो घिसा जा रहा है, पर हाथ में एक-एक मंगल चूड़ी ही है, इसलिये आपसी टकराहट बन्द हो गई है। अकेला कंगन आवाज नहीं करता।"

Scanned by CamScanner

एकत्वभाव में सुख, अनेक में दुःख

राजा पटरानी से बात करने के पश्चात् आँखें बन्द करके लेट गया। पटरानी ने सोचा कि 'स्वामी को नींद आ रही है।' लेकिन आँखें बन्द किये राजा सोच रहा था—'अकेले में ही शान्ति है। दो के सम्पर्क से ही अशान्ति उत्पन्न होती है।'

फिर उसका चिन्तन विस्तृत हुआ—'जहाँ अनेक हैं, वहाँ संघर्ष, दुःख, पीड़ा और रागादि दोष हैं; जहाँ एक है, वहीं सच्ची सुख-शान्ति है। जहाँ शरीर, इन्द्रियाँ, मन और इससे आगे धन, परिवार, राज्य आदि परभावों की बेतुकी भीड़ है, वहीं दुःख है। जहाँ केवल एकत्वभाव है, आत्मभाव है, वहाँ दुःख नहीं है। अतः जब तक में मोहवश स्त्रियों, खजानों, महल तथा गज-अश्वादि से एवं

Scanned by CamScanner

राजकीय भोगों से संबद्ध हूँ, तब तक मैं दुःखित हूँ। इन सबको छोड़कर एकाकी होने पर ही सुखी हो सकूँगा।' वह इस पर चिन्तन करते-करते विचारों की गहराई में उतर गया और उसके मन में वैराग्य जागृत हो गया।

उसने सर्व-संग परित्याग करके एकाकी होकर प्रव्रजित होने का दृढ़ संकल्प किया। दीक्षा ग्रहण करने की भावना का चिन्तन करते-करते राजा नमिकुमार को गहरी नींद आ गई। शुभ भावों के पुण्य प्रभाव से छह मास का दाहज्वर शान्त हो गया। रात्रि में श्वेतगजारूढ़ होकर मेरुपर्वत पर चढ़ने का विशिष्ट स्वप्न देखा, जिस पर ऊहापोह करते-करते जातिस्मरणज्ञान उत्पन्न हो गया। राजा ने जान लिया कि मैं पूर्वभव में शुद्ध संयम पालन के कारण उत्कृष्ट १७ सागरोपम वाले सातवें महाशुक्र देवलोक के पुष्पोत्तर विमान में उत्पन्न हुआ, वहाँ से च्यवकर इस जन्म में राजा बना।

Scanned by CamScanner

नमि प्रवज्या

प्रातःकाल होते ही नमिकुमार ने अपने समस्त राजपरिवार को एकत्र करके अपने संकल्प की घोषणा की और अपने पुत्र को राजगद्दी पर बैठाकर स्वयं सब कुछ त्याग कर नगर के बाहर उद्यान की ओर चल दिया। रानियों ने उन्हें रोकने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु वे नहीं रुके। उद्यान में पहुँचकर अपने सभी वस्त्राभूषण उतारे और मुनि वेश पहनकर संयम ग्रहण कर लिया।

Scanned by CamScanner

नमिकुमार को अकस्मात् राज्य त्याग कर दीक्षित हुए देखकर देवलोक में देवराज इन्द्र ने विचार किया—'नमिकुमार का इस प्रकार दीक्षा लेना क्षणिक् भावावेश तो नहीं है ? बिना स्थिर परिणाम के ये संयम का पालन शायद ही कर सकेंगे ? मुझे इनके भावों की स्थिरता, दृढ़ता की परीक्षा लेनी चाहिए।'

तब देवेन्द्र ने एक ब्राह्मण पंडित का रूप धारण किया और नमि राजा के पास आए और उनसे राजधर्म से सम्बन्धित दस प्रश्न किये।

इन्द्र के प्रश्न नमिराजर्षि के उत्तर

(इन दस प्रश्नों में इन्द्र ने क्षात्र धर्म की याद दिलाते हुए लोक जीवन से सम्बन्धित दस प्रश्न किये। जिनका समाधान नमिराजर्षि ने एकत्व भावना और अध्यात्मिक दृष्टि से कर दिया। पाठकों की जिज्ञासा हेतु यहाँ इन प्रश्नोत्तरों के हिन्दी भावार्थ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

इन्द्र का पहला प्रश्न था—"हे राजर्षि ! मिथिला के राजप्रसादों व घरों में कोलाहल, विलाप, क्रन्दन के शब्द क्यों सुने जा रहे हैं ?"

इस कथन को सुनकर नमि राजर्षि ने देवेन्द्र से कहा—"मिथिला नगरी में एक उद्यान (राजभवन) था, उसमें ठंडी छाया वाला, मनोरम पत्तों, फूलों से युक्त बहुत-से पक्षियों (पुरजन-परिजन) का सदैव अत्यंत उपकारी (बहुगुण सम्पन्न) एक वृक्ष (स्वयं नमि राजर्षि) था।

प्रचण्ड आँधी (दाह-ज्वर निमित्त) से आज उस मनोरम वृक्ष के गिर जाने (दीक्षा लेने) पर, हे ब्राह्मण ! ये दुःखित, अशरण और पीड़ित पक्षी क्रन्दन कर रहे हैं।"

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

यह सुनकर देवेन्द्र ने फिर प्रश्न किया—"राजर्षि ! आपका महल अग्नि और वायु इन दोनों से जल रहा है, अतः आप अपने अन्तःपुर की ओर क्यों नहीं देखते ? (अर्थात् उनकी रक्षा क्यों नहीं करते)।"

नमिराजर्षि ने उत्तर दिया—"कौन मेरा, क्या है मेरा ? जिनके पास अपना कुछ भी नहीं है, ऐसे, हम लोग सुख से रहते और जीते हैं। अतः मिथिला के जलने से मेरा तो कुछ भी नहीं जलता। पुत्र, पत्नि, गृह-व्यापार से मुक्त भिक्षु के लिये न कोई वस्तु प्रिय होती है न कोई अप्रिय। मेरा तो आत्म-धन है जो सुरक्षित है।"

Scanned by CamScanner

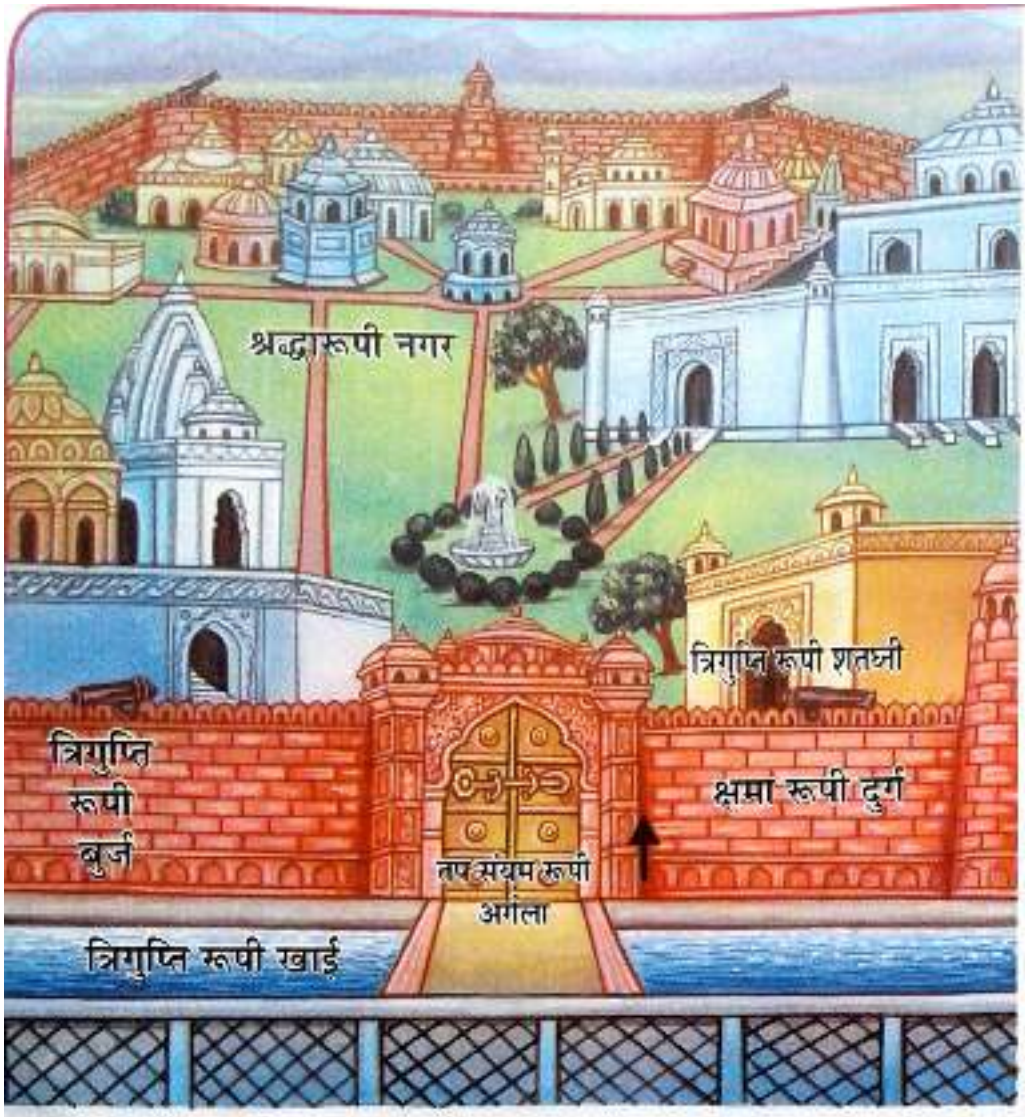

देवेन्द्र ने तब तीसरा प्रश्न किया—"हे क्षत्रिय ! पहले तुम नगर का परकोटा, नगर का मुख्य द्वार, अट्टालिकाएँ, दुर्ग की खाई आदि बनवा दो फिर दीक्षा लेना।"

नमि राजर्षि ने कहा—''जो मुनि श्रद्धा को नगर, तप और संयम को अर्गला-सांकल, क्षमा को सुदृढ़ प्राकार (दुर्ग) बनाये, उसे त्रिगुप्ति (मन, वचन, काय) रूप बुर्ज, खाई और शतघ्नी (तोप) से सुरक्षित करे। पराक्रम के धनुष पर पाँच समिति (इर्या समिति आदि) की प्रत्यंचा बनाये। धृति की मूठ बनाये तथा सत्य की डोर से उसे बाँधे और तप के बाणों से युक्त धनुष के द्वारा कर्म रूपी कवच को भेदकर वह आत्म-विजय प्राप्त करता है, वह मुनि संसार से सर्वथा विमुक्त बन मुक्ति को प्राप्त होता है।"

देवेन्द्र ने फिर चौथा प्रश्न किया—"पहले आप अपने वंशजों के रहने के लिए सुन्दर-सा प्रासाद, वर्धमान गृह (वास्तुशास्त्र के अनुसार निर्मित जिसमें रहने से निरंतर सब चीजों में वृद्धि होती है), चन्द्रशालाएँ आदि बनाएँ फिर दीक्षा लें।"

Scanned by CamScanner

नमि राजर्षि बोले—"जो मार्ग (संसार) में घर बनाता है, वह अपने को संशय की स्थिति में डालता है। अतः जहाँ शाश्वत घर बनाने की इच्छा हो वहीं अपना स्थाई घर (मोक्ष) बनाना चाहिए।"

देवेन्द्र ने फिर पाँचवाँ प्रश्न किया—"हे क्षत्रिय ! पहले आप लुटेरों का, डाकुओं का, तस्करों का दमन करिए, नगर के लिए शांति-व्यवस्था करके फिर दीक्षा ग्रहण कीजिए।"

राजर्षि ने कहा—"हे विप्र ! आपका कहना उपादेय नहीं है क्योंकि अनेक बार वास्तविक अपराधी की पहचान न होने पर निरपराधी को दंड दिया जाता है। मैं जिस संयम-पथ पर बढ़ा हूँ उसमें आत्मा के वास्तविक अपराधी पाँच इन्द्रियों का निग्रह करूँगा। कषायरूपी आत्म-धन के लुटेरों से उसकी रक्षा करूँगा।"

विप्ररूप में देवेन्द्र ने तब छठा प्रश्न किया—"हे नराधिपति ! अनेक राजा जो आपके सामने नहीं झुकते, पहले उन्हें वश में करके फिर दीक्षा ग्रहण करना।"

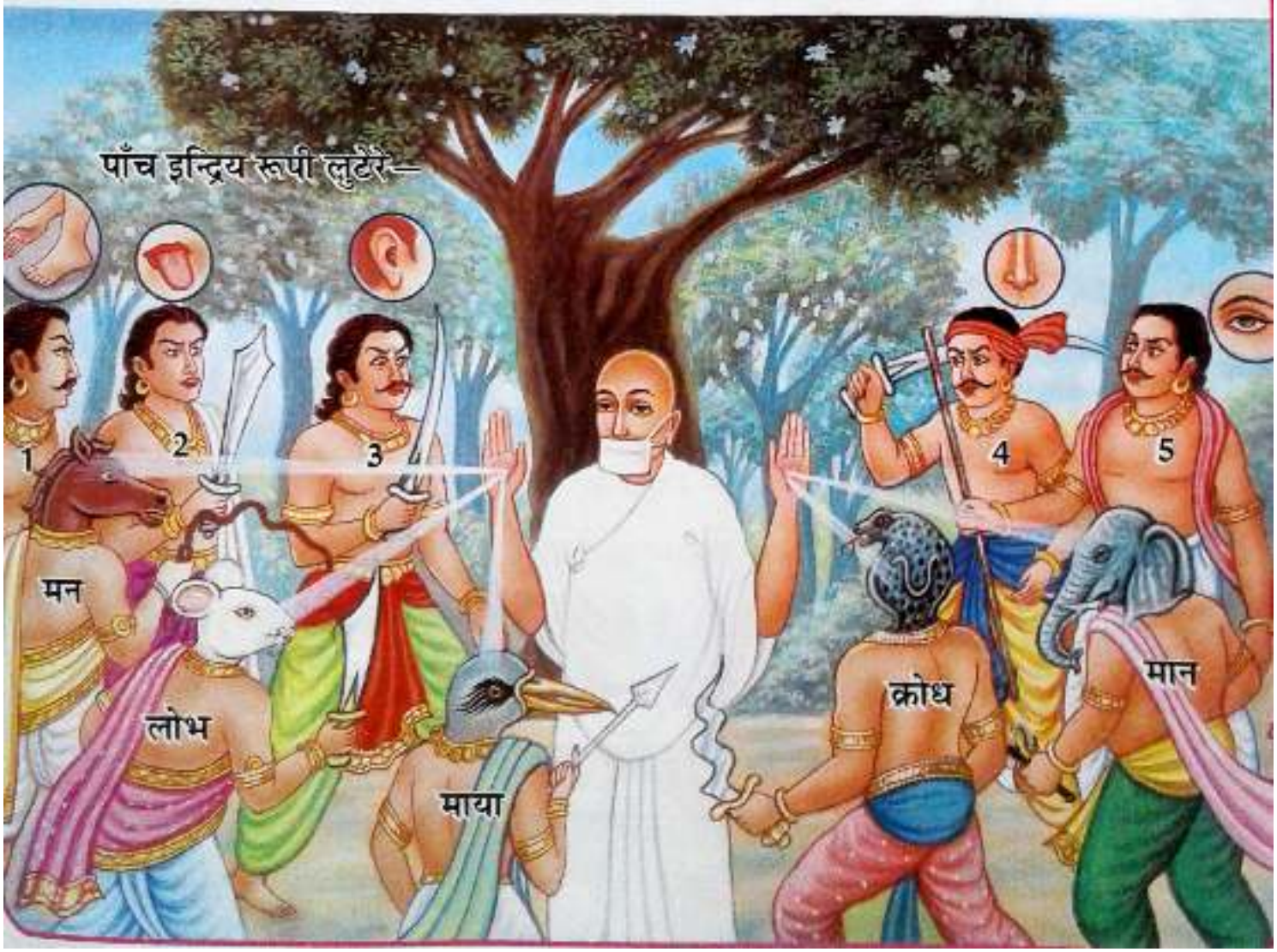

Scanned by CamScanner

इस पर नमि राजर्षि बोले—"बाह्य शत्रुओं को जीतने से क्या लाभ ? सच्चा लाभ तो क्रोधादि कषायों, दुर्जेय मन और पाँच इन्द्रियों को जीतने में है। क्योंकि ये ही दुःख के कारणभूत हैं। एक अपने को जिसने जीत लिया, उसने सब कुछ जीत लिया।"

विप्ररूप देवेन्द्र ने सातवाँ प्रश्न किया—"हे क्षत्रिय, तुम विशाल यज्ञ कराकर श्रमण और विप्रों को भोजन, दान देकर भोग भोगकर और फिर स्वयं यज्ञ करके साधु बनना।"

इन्द्र के इस कथन को सुनकर नमि राजर्षि ने प्रतिउत्तर दिया—"हे विप्र ! जो व्यक्ति प्रति मास दस लाख गायों का दान करता है, उसको उस दान का उतना श्रेष्ठ फल नहीं मिलता, जितना श्रेष्ठ फल किसी प्रकार का दान न देकर भी संयम ग्रहण करने वाले को मिलता है। क्योंकि संयम से सभी जीवों को अभयदान मिलता है।"

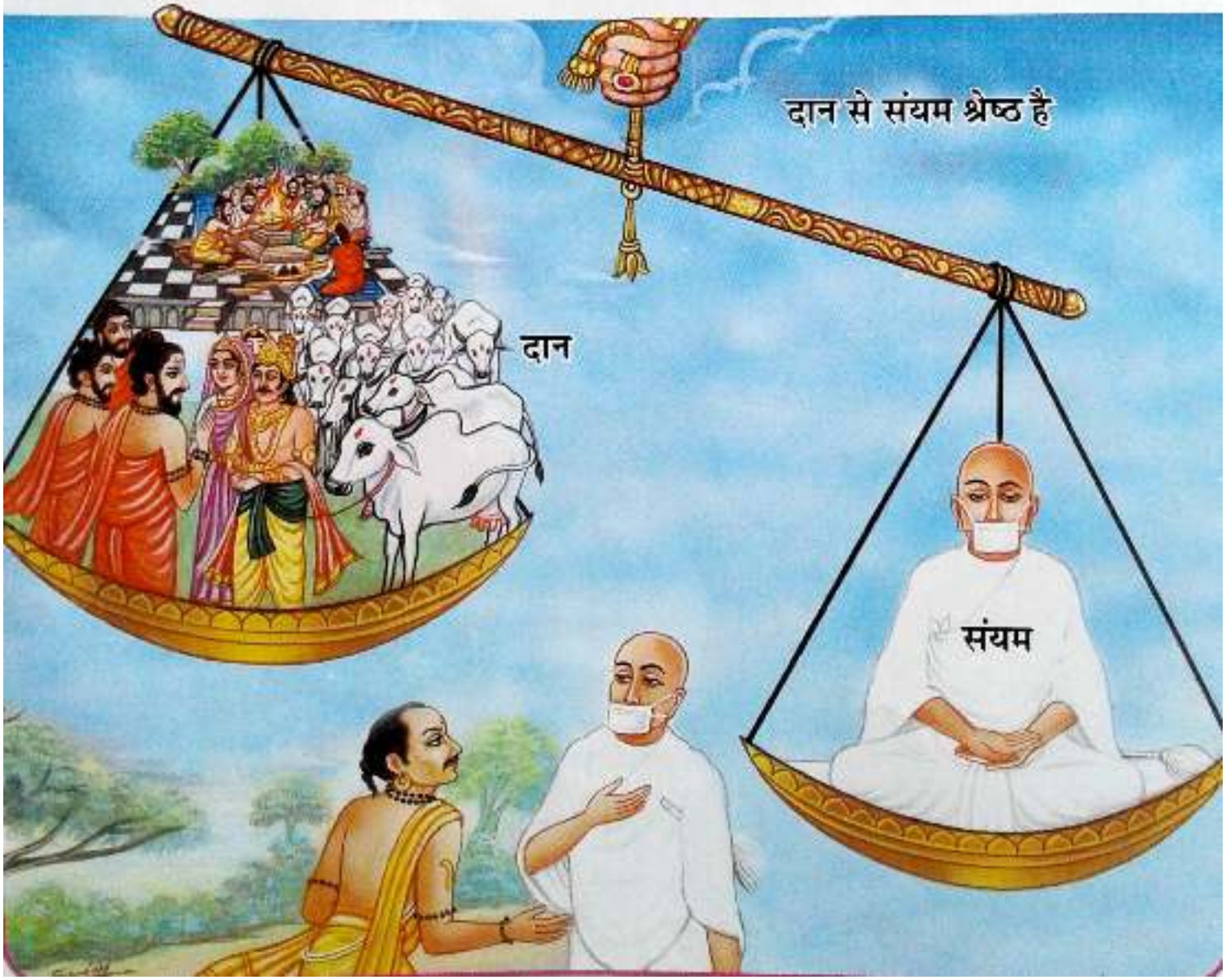

Scanned by CamScanner

विप्रवेशी इन्द्र ने फिर आठवाँ प्रश्न किया—"आप गृहस्थाश्रम में रहकर ही पौषधादि व्रत करें। जिस धर्मध्यान के लिए आप दीक्षा ले रहे हैं, वह तो गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए भी किया जा सकता है।"

इस पर नमि राजर्षि ने कहा—"विप्र ! संयम के महत्त्व को शायद जानते नहीं। जो अज्ञानी साधक महीने-महीने का तप करके पारणे के दिन कुश (तिनका) के अग्र भाग पर आए केवल उतना अल्प आहार ही ग्रहण करता है वह सम्यक्-चारित्र रूप मुनिधर्म का पालन करने वाले साधक की सोलहवीं कला को भी नहीं पा सकता।"

विप्रेन्द्र ने अब भी हार नहीं मानी और नवाँ प्रश्न किया—"हे क्षत्रियवर ! पहले आप चाँदी, सोना, मणि, मुक्ता आदि से राजकोष की वृद्धि करें फिर दीक्षा लें।"

इस पर नमि राजर्षि कहते हैं—"इच्छा हु आगास समा अणंतिया।" स्वर्ण-रजत-मुक्ता-मणि के कैलाश पर्वत जैसे असंख्य ढेर मिल जाएँ फिर भी लोभी मानव की तृष्णा शांत नहीं होती, इच्छा तो आकाश के समान अनंत है।

अपने अंतिम प्रश्न में ब्राह्मण वेश में इन्द्र नमि राजर्षि से कहता है—''हे पृथ्वीपति ! आश्चर्य है कि आप सम्मुख आए हुए भोगों को त्यागकर अप्राप्त भोगों की अभिलाषा कर रहे हैं। लगता है उत्तरोत्तर अप्राप्त-भोगाभिलाषा रूप संकल्प-विकल्पों से आप ठगे जा रहे हैं ?

नमि राजर्षि ने देवेन्द्र से कहा—"ये काम-भोग शल्यरूप, विषरूप, आशीविष सर्प के समान हैं। ये क्षणिक् हैं, जन्म-जन्मांतर में भटकाने वाले हैं। जिनको ये मिलते नहीं पर जो इनकी इच्छा भी करते हैं, उन्हें भी दुर्गति प्राप्त होती है। क्रोध से जीव नरक में जाता है, मान से अधम गति प्राप्त होती है, माया से सद्गति का नाश होता है और लोभ से इहलौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार का भय बना रहता है। अतः मैं विद्यमान या अविद्यमान किसी भी तरह के काम-भोगों का अभिलाषी नहीं हूँ।"

Scanned by CamScanner

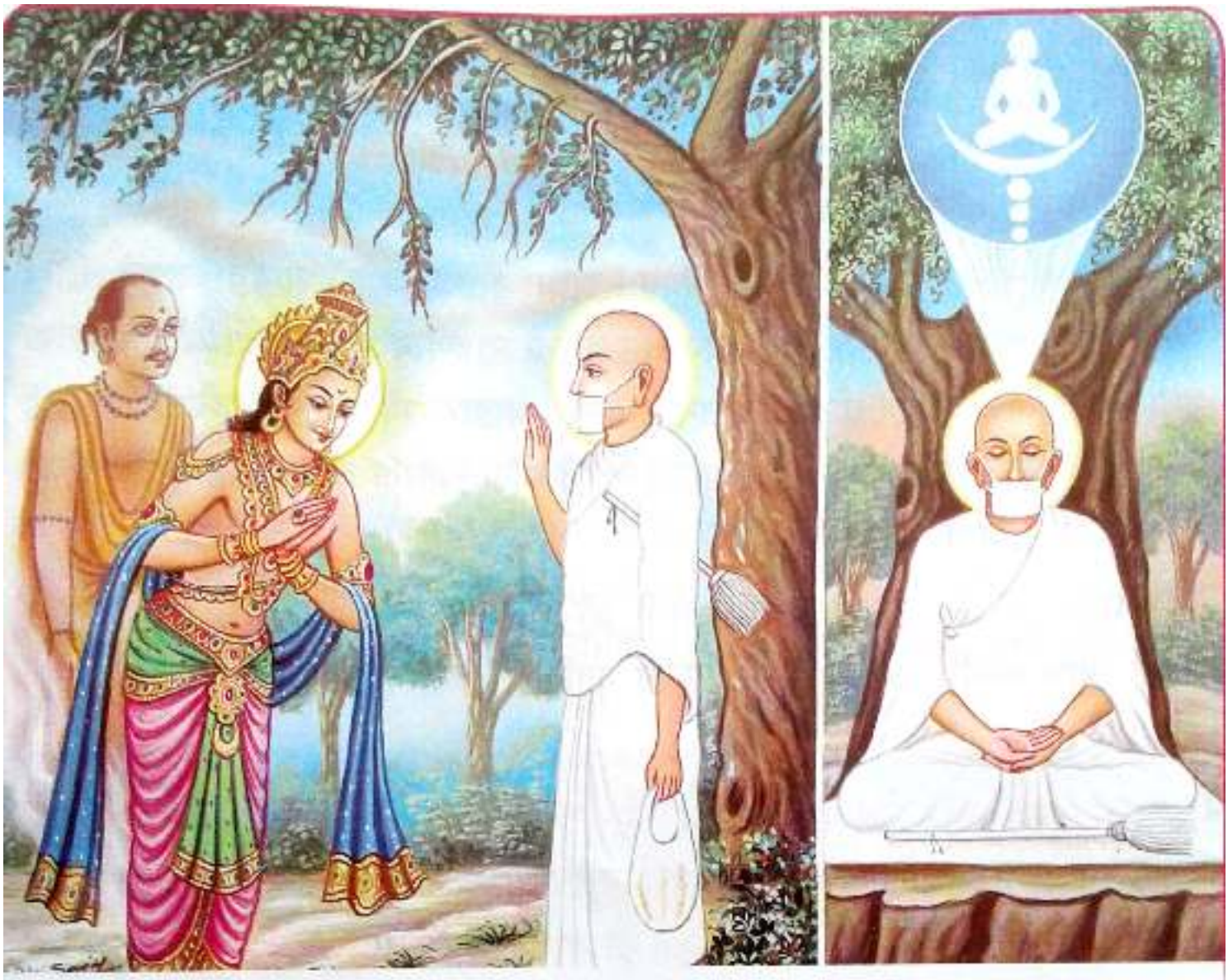

नमि राजर्षि का उत्तर सुनकर देवेन्द्र प्रभावित हुए और अपने वास्तविक रूप में आ गये और नमि राजर्षि की मधुर वचनों में स्तुति कर कहने लगे—"हे मुनि ! आपने क्रोध पर विजय प्राप्त कर ली है। मान को जीत लिया है। आप छल-कपट, माया से परे हो गये हैं। आपका आर्जव-मार्दव उत्तम है। आप कर्ममल रहित होकर लोक में उत्तमोत्तम स्थान प्राप्त करेंगे।" यह कहते हुए देवेन्द्र ने वन्दना की और वापस स्वर्ग लौट गये। इन्द्र द्वारा स्तुति एवं वन्दन करने पर भी नमि राजर्षि के मन में किसी प्रकार का अहंभाव नहीं आया। वे निष्काम, निर्दोषभाव से अपनी आत्मा को भावित करते हुए संयमाराधना में तल्लीन बने रहे। उत्कृष्ट संयम-तप आराधन कर वे सिद्ध, बुद्ध और मुक्त हुए।

भगवान महावीर ने फरमाया है कि संबुद्ध, पण्डित और विलक्षण पुरुष इसी प्रकार भोगों से निवृत्त होते हैं, जैसे कि नमि राजर्षि। □□

Scanned by CamScanner

स्वाध्याय-ध्यान प्रणेता, डॉ. पदमचन्द्र जी म. सा. के प्रवचन एवं संपादित पुस्तकें

सचित्र बड़ी साधु वन्दना भाग- 1-5

आचार्य श्री जयमल जी म. की अमर रचना बड़ी साधु वन्दना की एक-एक कड़ी पर विस्तृत विवेचन करने वाले प्रवचन।

(प्रवचनकार : डा. पदमचन्द्र जी म. सा.)

रंगीन चित्रों द्वारा प्रत्येक गाथा का सजीव चित्रण किया गया है।

400 पृष्ठों का है।

प्रत्येक भाग पक्की बाईडिंग युक्त

- प्रत्येक भाग का मूल्य : 350/- है
- पाँचों भागों को एक साथ मंगाने पर मूल्य : 1250/-

जय ध्वज

एक भवावतारी आचार्य श्री जयमल जी म. सा. का सम्पूर्ण जीवन चरित्र पाँच भागों में प्रकाशन की योजना तीन भाग प्रकाशित हो चुके है। चौथा भाग प्रेस में है।

प्रत्येक भाग का मूल्य : 350/- है

बड़ी साधु वन्दना सचित्र कथाऐं

बड़ी साधु वन्दना में दिये गये ऐतिहासिक चरित्रों के जीवन पर रंगीन सचित्र कथायें।

कुल 108 भाग प्रकाशन की योजना

प्रत्येक भाग का मूल्य : 25/- है।

एक भवावतारी आचार्य श्री जयमल जी म. सा. का संक्षिप्त जीवन चरित्र एवं स्वाध्याय हेतु नमोकार मंत्र, जयजाप, पच्चीस बोल स्तोक संग्रह इत्यादि प्रकाशित साहित्य

पुस्तकें मंगाने के लिऐ निम्न पते पर अपना आर्डर भेजें।

श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन, चेन्नई

78, MILLERS ROAD, KILPAUK, CHENNAI - 600 010. CELL : 9444143907, 9841047607

Scanned by CamScanner